International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

हिमालयी आन्दोलनों का आन्दोलनकारी जनकवि – गिरीश तिवारी 'गिर्दा'

दीपक कुमार[1], डा0 किरन त्रिपाठी[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग, गोकुलदास हिन्दू कन्या महाविद्यालय मुरादाबाद (उ0प्र0)

[2]शोध निर्देशिका, प्रोफेसर–इतिहास विभाग, गोकुलदास हिन्दू कन्या महाविद्यालय मुरादाबाद (उ0प्र0)

शोध सारांश

उत्तराखण्ड राज्य अपनी भौगोलिक संरचना एवं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर धनी राज्य रहा है। यहाँ की नदियाँ, वन, तथा ग्लेशियर उत्तराखण्ड को ही नहीं अन्य राज्यों को भी प्राचीन काल से ही लाभान्वित करते आये हैं। पूँजीपतियों द्वारा इस क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पदा का दोहन करने के विरूद्ध समय–समय पर उत्तराखण्ड के कई आन्दोलनकारियों ने मुखर होकर उनका विरोध किया। ऐसे ही आन्दोलनकारियों में से एक थे, कुमाऊँनी और हिन्दी के प्रसिद्ध जनकवि, गिरीश तिवारी 'गिर्दा'। गिर्दा का उत्तराखण्ड के पर्वतीय अंचल के प्रति अगाध प्रेम और स्नेह उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप में देखने को मिलता है। यहाँ की नदियां, नौले, जंगल, जमीन और पहाड़ों के अंधाधुंध दोहन के वे प्रबल विरोधी रहे। अपनी मातृभूमि और हिमालयी क्षेत्र की रक्षा के लिए वे सक्रिय रूप से अपनी आवाज से जनता को इस पर्वतीय अंचल की भौगोलिक संरचना के प्रति निरन्तर जागरूक करने का कार्य करते रहे। अपने गीतों और कविताओं के माध्यम से जहाँ वे एक ओर क्षेत्रीय जनमानस में जागृति फैलाने का कार्य कर रहे थे तो वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पदा और भौगोलिक संरचना के साथ छेड़छाड़ करने वालों का खुलकर विरोध करते रहे। इस क्षेत्र की प्राकृतिक संरचना के कारण वे यहाँ बनाये जा रहे बड़े–बड़े बांधों के भी पक्षधर नहीं थे। तत्कालीन उत्तराखण्ड के आन्दोलनों में उनकी सक्रियता देखते ही बनती है। समाज, संस्कृति, प्रकृति और क्षेत्रीय मुद्दों पर वे सदैव मुखर रहे। चिपको आन्दोलन के दौर में वनों की नीलामी के खिलाफ प्रतिरोध, नशा नहीं रोजगार दो, उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन तथा नदी बचाओ अभियान में उनकी सक्रिय भागीदारी रही।

कूट शब्द – उत्तराखण्ड, *पहाड़, गिर्दा, समाज, संस्कृति, प्रकृति, क्षेत्रीय आन्दोलन, वनों की नीलामी, नदी बचाओ अभियान, नशा नहीं रोजगार दो,* उत्तराखण्ड *आन्दोलन।*

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड में 20वीं शताब्दी के 70 का दशक राजनैतिक–सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हलचलों का रहा। इसके शुरुआती वर्षों में कुमाऊँ एवं गढ़वाल विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय के लिए आन्दोलन और वन आन्दोलनों ने यहाँ के निवासियों की सामाजिक चेतना को नया आयाम प्रदान किया। वे अपनी स्थानीय और क्षेत्रीयता के हक–हकूकों के प्रति अधिक सचेत होने लगे थे। वनों के दोहन के विरुद्ध 26 मार्च, 1974 को रैणी गाँव, चमोली (गढ़वाल) से चिपको आन्दोलन और इसके तुरंत बाद समग्र विकास की पड़ताल करने के उद्देश्य से पहाड़ के कुछ उत्साही युवाओं द्वारा शेखर पाठक के नेतृत्व में 25 मई, 1974 को अस्कोट (पिथौरागढ़) से आराकोट (उत्तरकाशी) अभियान शुरू हुआ। इसके अगले चरण में पर्वतीय युवा मोर्चा, युवा निर्माण समिति और उत्तराखण्ड सर्वोदयी मण्डल के संयुक्त प्रयासों से सर्वोदयी और वामपंथी विचारधारा वाले युवाओं ने गोपेश्वर में 'पढ़ाई के साथ सामाजिक लड़ाई' नारे के साथ 25 मई, 1977 को 'उत्तराखण्ड संघर्ष वाहिनी' का गठन किया। संघर्ष वाहिनी से जुड़े लोग उनके

उद्देश्यों और संघर्षों को देखते हुए गिर्दा को लाए। इन सभी प्रयासों में गिर्दा की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में सक्रिय साझेदारी और भागीदारी रहती थी।[1]

गिरीश तिवारी 'गिर्दा' का परिचय

गिरीश तिवारी 'गिर्दा' का जन्म अल्मोड़ा जनपद के हवालबाग विकासखण्ड में कोसी नदी के किनारे बसे ग्राम ज्योली, में 10 अगस्त, 1945 को एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था।[2] हाईस्कूल पास कर गिर्दा घर से भाग गए। विविध जीवनाभुवों के बाद वे 1967 में गीत और नाटक प्रभाग नैनीताल में कलाकार बने। दस वर्ष बाद इसी नैनीताल में वे दमन और दहशत के बीच लोककवि गौर्दा का गीत लेकर जगलों की नीलामी के खिलाफ खड़े और गिरफ्तार हुए।[3] प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी गिर्दा उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध साहित्यकार, निर्देशक, पटकथा लेखक रंगकर्मी और क्षेत्रीय एवं जनसरोकार से जुड़े मुद्दों के लिए संघर्षरत आन्दोलनकारी थे।[4] स्वतंत्रता के पश्चात उत्तराखण्ड में हुए जनसरोकार से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रीय आन्दोलनों में उनकी भूमिका और योगदान को जानने और समझने के लिए उन आन्दोलनों का अध्ययन करना आवश्यक है।

क्षेत्रीय आन्दोलनों में गिर्दा

उत्तराखण्ड के जन–सरोकारों से जुड़ा शायद ही कोई मुद्दा हो जो गिर्दा की कलम से अछूता रहा हो। सरकारी अव्यवस्था से उपजे गुस्से को तथा उत्तराखण्ड में हुए जनान्दोलनों को लेकर लिखे गये उनके गीतों में जो दर्द छुपा हुआ है, आह्वान है तथा उज्ज्वल भविष्य की आस है, वह कहीं किसी और कवि की रचना में नजर नहीं आती। जहाँ भी जनसंघर्ष था, गिर्दा उन सभी जगहों पर कवि, गायक, नायक के रूप में अनिवार्य रूप से विद्यमान रहते थे। 'गिर्दा' की जन–आन्दोलनों में सशक्त भागीदारी की शुरुआत चिपको आन्दोलन के दौर में शुरुआत 27 नवम्बर, 1977 को वनों की नीलामी के खिलाफ नैनीताल में हुए प्रदर्शन से हुई।[5] फिर वे न सिर्फ चिपको आन्दोलन बल्कि आगामी हर आन्दोलन के सांस्कृतिक स्वर बने।[6]इसके पश्चात ता–उम्र 'गिर्दा' का शासन–प्रशासन, पुलिस तथा असामाजिक तत्वों से सार्वजनिक संघर्ष का अटूट रिश्ता बना रहा। अपनी मातृभूमि और हिमालय के प्रति उनका असीम प्रेम उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है।[7] जिसे उनके एक लोकगीत की कुछ पंक्तियों से समझा जा सकता है।

उत्तराखण्डा मेरी मातृभूमि, मातृभूमि मेरी पितृभूमि।
ओ भूमि तेरी जै जैकारा, म्यारा हिमाला।।[8]

वनों की नीलामी खिलाफ आन्दोलन –

आपातकाल के बाद चिपको आन्दोलन नये रूप में पूरे उत्तराखण्ड में फैला। लेकिन नैनीताल में इसका पुनर्रागमन हुआ। इससे पूर्व 1974 में नैनीताल के युवाओं ने जंगलों के नीलामी के विरूद्ध प्रदर्शन कर नीलामी स्थगित करने में सफलता प्राप्त की थी ।[9]

27–28 नवम्बर 1977 को नैनीताल स्थित ऐतिहासिक शैले हॉल में जंगलों की नीलामी होनी थी। प्रशासन द्वारा नीलामी से 15 दिन पहले से ही शहर में भय का माहौल बनाया गया। पुलिस–पीएसी के फ्लैग–मार्च के साथ ही शहर में धारा 144 लागू कर दी गयी थी। नैनीताल के मल्लीताल बाजार में नैनीताल क्लब के रास्ते में चार–पाँच दिन पहले

[1] http/www.kafaltree.com,21 august 2024
[2] http/www.wikipidia.com
[3] पाठक शेखर(2019)हरी भरी उम्मीद, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 432
[4] http/www.wikipidia.com
[5] http/www.kafaltree.com 21aug2024
[6] पाठक शेखर– वही पृष्ठ 432
[7] http/www.kafaltree.com 21aug2024
[8] *तिवारी गिरीश 'गिर्दा' (2002) उत्तराखण्ड काव्य, पहाड़ प्रकाशन नैनीताल, पृष्ठ 60*
[9] *गिर्दा के आयाम(2015) पहाड़ प्रकाशन,नैनीताल, अंक 19, पृष्ठ–27*

ही लकड़ी के गिल्टों से मार्ग अवरूद्ध कर दिया गया। ताकि अन्य क्षेत्रों से आन्दोलनकारी नैनीताल न आ सकें । 25–26 नवम्बर, को गिर्दा सहित आन्दोलनकारियों के नाम के वारण्ट जारी किये गये। आन्दोलनकारियों ने भूमिगत होकर आन्दोलन की रणनीति तैयार की। 27 नवम्बर, 1977 की रात ही गिर्दा द्वारा आन्दोलन के लिए 1926 में लोककवि गौरीदत्त पाण्डे 'गौर्दा' के गीत 'वृक्षन को विलाप' को आधार बनाकर आन्दोलन गीत तैयार किया गया। जिसे पेड़ों की ओर से गाते हुए विरोध प्रदर्शन करने की योजना बनायी गयी–[10]

'' आज हिमाल तुमन कैं धत्यूंछौ।
जागो जागो रे मेरा लाल।
नी करि दी हालो हमरि नीलामी।
नी करणि दियो हमारो हलाल'' ।[11]

28 नवम्बर की सुबह आन्दोलनकारियों का नेतृत्व हाथ में हुड़का लिये हुए गिर्दा कर रहे थे। गिर्दा ने ''आज हिमाल तुमन कैं धत्यूंछौ'' गाना शुरू किया। अन्य साथी उत्तराखण्ड संघर्ष वाहिनी के विनोद पाण्डे, राजा बहुगुणा, षष्टीदत भट्ट, जनता पार्टी के महेन्द्र मटियानी, शोध छात्र दिवान मटियानी, नैनीताल समाचार के संपादक राजीव लोचन शाह, कुमाउ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा0 शेखर पाठक गीत को दोहराते हुए आगे बढ़ रहे थे।[12] मनौरा के मजदूर जसराम ने जब आन्दोलनकारियों को गाते हुए देखा तो वह भी अपने काम पर न जाकर इनके साथ शामिल हो गए। गिरीश तिवारी गिर्दा गाने और हुड़का बजाने के साथ बीच – बीच में गीत का अनुवाद कर रहे थे, कभी अतिरिक्त टिप्पणी कर रहे थे। यह दिन गिर्दा के रूपान्तरण का दिन था, क्योंकि इसी दिन उनका प्रत्यक्ष रूप से जनआन्दोलन में आगमन हुआ। सरकार द्वारा दमनात्मक कार्यवाही करते हुए गिर्दा सहित अन्य आन्दोलनकारियों को गिरफ्तार कर हल्द्वानी जेल भेज दिया गया।

उधर तल्लीताल बस अड्डे से नगर कांग्रेस सचिव विश्वम्भर नाथ सखा के नेतृत्व में एक जुलूस मल्लीताल आने की कोशिश करने लगा। इसमें उत्तराखण्ड संघर्ष वाहिनी के निर्मल जोशी, प्रदीप टम्टा, महेन्द्र बिष्ट, प्रकाश फुलोरिया, जीवन सिंह तथा श्रमिक नेता हरीशचन्द्र चन्दोला थे।[13] इन आन्दोलनकारियों को पुलिस द्वारा तल्लीताल में ही रोककर गिरफ्तार कर लिया। पहले इन्हें भवाली–लोहाघाट मार्ग में कहीं जंगल में छोड़ने की योजना थी लेकिन फिर वे हल्द्वानी जेल लाए गए। वहीं जब सी0आर0एस0टी0 इण्टर कालेज छुट्टी हुई तो पुलिसकर्मियों ने छात्रों को भी आन्दोलनकारियों के साथ समझकर उन पर पानी की तेज बौछारें कर दी। प्रतिक्रिया में छात्रों ने भी पत्थर फेंके तो पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। हर तरफ अफरातफरी मच गयी। पूरे शहर का माहौल बदल चुका था। स्वतंत्र भारत में पहली बार नैनीताल में पुलिस ने अपने ही लोगों पर गोलियां चलाई। गोलियों और चिंगारियों के बीच नैनीताल क्लब आग के हवाले हो गया। यह आग प्रदर्शनकारियों को फँसाने के लिए नीलामीकर्ताओं द्वारा ही किया गया षडयन्त्र था, क्योंकि पुलिस और पीएसी से घिरे नैनीताल क्लब तक प्रदर्शनकारियों का पहुँच पाना किसी भी स्थिति में सम्भव नहीं था। प्रशासन को अपनी व्यवस्था पर इतना भरोसा था कि, प्रदर्शन के दौरान नैनीताल के जिलाधिकारी अपने फ्लैट में क्रिकेट मैच खेल रहे थे।[14]

वहीं दूसरी ओर हल्द्वानी जेल भेजे गये आन्दोलनकारियों को छः घण्टे पश्चात यह कह कर छोड़ दिया गया कि, नीलामी स्थगित कर दी गयी है। सभी आन्दोलनकारी आश्चर्यचकित थे कि यह चमत्कार कैसे हो गया। जेल से बाहर आकर उन्हें पता चला कि नैनीताल में भयंकर काण्ड हो गया है और चार–पाँच लोग पुलिस फायरिंग में मारे गये हैं। सभी आन्दोलनकारी मायूस हुए लेकिन थोड़ी देर बाद पता चला कि कोई मरा नहीं है, तो उनकी जान में जान आयी ।[15]

---

[10] *गिर्दा के आयाम (2015) वही पृष्ठ– 28–29*
[11] *तिवारी गिरीश 'गिर्दा' (2002) वही पृष्ठ– 26*
[12] *पाठक शेखर– वही पृष्ठ 278*
[13] पाठक शेखर– वही पृष्ठ 279
[14] *गिर्दा के आयाम (2015) वही पृष्ठ– 28–29*
[15] *गिर्दा के आयाम (2015)वही, पृष्ठ– 234*

नैनीताल काण्ड के बारे में सुनकर गढ़वाल से प्रसिद्ध समाजसेवी और पर्यावरणविद चण्डीप्रसाद भट्ट दिसम्बर 1977 को नैनीताल पहुचे, जहाँ डा0 शेखर पाठक (कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल के प्रोफेसर, पर्यावरणविद) के माध्यम से उनकी मुलाकात गिर्दा से हुई, और 27–28 नवम्बर के घटनाक्रम पर चर्चा करते हुए गिर्दा ने 'आज हिमाल तुमन कैं धत्यूछो' गीत गम्भीर मुखाकृति और ललाट तन से सुनाया।[16] फिर चर्चा के पश्चात निर्णय हुआ कि यह संदेश पूरे राज्य में फैलाना चाहिए। भारत सरकार की सेवा में होने के बावजूद गिर्दा इस कार्य के लिए तैयार हो गए। अगले ही दिन आठ–दस लोग की यह संदेश यात्रा तल्लीताल डांठ से हुड़के की थाप पर सस्वर गाते हुए गिर्दा के साथ शुरू हुई। नैनीताल से यह यात्रा भवाली, गरमपानी होते हुए अल्मोड़ा पहुँची जहाँ शमशेर सिंह बिष्ट, पी0 सी0 तिवारी, प्रदीप टम्टा, जगत सिह, और षष्टीदत्त के साथ दर्जनों युवा आन्दोलन यात्रा में शामिल हुए। गिर्दा के साथ आज 'हिमाल तुमन कैं धत्यूछों' गीत गाते हुए विशाल जन समूह अल्मोड़ा शहर की परिक्रमा के बाद सभा स्थल पर आ गया और जुलूस सभा में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार कोसी, सोमेश्वर, कौसानी, गरूड़ होते हुए बागेश्वर पहुँचे। द्वाराहाट में बिपिन त्रिपाठी के नेतृत्व में सभा आयोजित हुई। वहाँ से गैरसैंण, कर्णप्रयाग, जोशीमठ होते हुए गोपेश्वर में इस एक सप्ताह की यात्रा का समापन हुआ।[17]

नशा नहीं रोजगार दो आन्दोलन –

वर्ष 1984 में उत्तराखण्ड में नशे के विरूद्ध आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। इस आन्दोलन का प्रचार–प्रसार करने में राजीव लोचन शाह के संपादन में नैनीताल से प्रकाशित होने वाले नैनीताल समाचार पत्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही। गिर्दा नैनीताल समाचार के अभिन्न अंग थे। इस आन्दोलन के सांस्कृतिक ही नहीं राजनैतिक पक्ष के भी दिशा–निर्देशक गिर्दा थे।[18] साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्था जागर के जनगीत और नुक्कड़ नाटकों के साथ पदयात्रा करते हुए टोली के सदस्य जनसमस्याओं को समझते हुए उनको प्रेरित करते थे, जागर के मूल बिन्दु थे गिर्दा । जागर की पदयात्राओं के फलस्वरूप पहाड़ की सबसे बड़ी समस्या जो सामने आयी वह थी नशे की। मुख्यतः शराब का सेवन उत्तराखण्ड के समाज को खोखला कर रहा था। घरों के जेवर, बर्तन और धन आदि शराब बेचने वालों की झोली में जा रहा था। इसी के प्रतिरोधस्वरूप नशा नहीं रोजगार दो आन्दोलन शुरू हुआ। अधिकांशतः इस नशे की कुप्रथा से पीड़ित वर्ग महिलाएँ थी। क्योंकि शराब पीते पुरूष थे, लेकिन घर महिलाओं के उजड़ते थे। इसलिए महिलाएँ इस आन्दोलन में प्रमुख शक्ति के रूप में सामने आकर आन्दोलन की जबरदस्त ताकत भी बनीं। महिलाओं द्वारा शराब की भट्टियों पर धरना देने के साथ ही कई शराब की दुकानों पर ताला ठोक दिया। रामगढ़ (नैनीताल) में नशे के खिलाफ जब महिलाओं का जुलूस निकला तब गिर्दा के मुख से जो गीत निकला उसने आन्दोलन को और भी स्फूर्त और ऊर्जावान बना दिया[19]–

रामगढ़ै की पूला हलकैनी किलै नै ।
लखनऊ सरकारा बुलानी किलै नै ।
छन आंखों सरकारा देखनी किलै नै ।
भट्टी जागा फैक्ट्री लगूनी किलै नै ।[20]

(रामगढ़ की पुल हिलती क्यों नहीं है, लखनऊ से सरकार बोलती क्यों नहीं है, आखें होते हुए भी सरकार देखती क्यों नहीं है, शराब की भट्टियों की जगह रोजगार के लिए फैक्ट्री क्यों नहीं लगाती है)

नशे से कई घरों के चिराग उजड़ जाने से पूरा परिवार ही नहीं राज्य से लेकर देश तक बर्बाद हो जाता है। यह बात गिर्दा बखूबी जानते थे। **नशा नहीं रोजगार दो,** आन्दोलन के दौरान **"जन एकता कूच करो, मुक्ति चाहते हो तो आओ**

[16] *गिर्दा के आयाम (2015)वही, पृष्ठ–29*
[17] *गिर्दा के आयाम (2015) वही, पृष्ठ–30*
[18] *उत्तरा महिला पत्रिका – नैनीताल, 2010 पृष्ठ– 16*
[19] *उत्तरा महिला पत्रिका(2010) नैनीताल, पृष्ठ– 13*
[20] *उत्तरा महिला पत्रिका(2010)वही,, पृष्ठ– 13*

संघर्ष में कूद पडो'' गाकर आम जनता से आन्दोलन में भागीदारी का आह्वान कर गिर्दा ने नशा मुक्त राज्य की परिकल्पना की थी।

पृथक उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन –

पहाड़ और तराई–भाबर की दयनीय दशा और सरकार की पहाड़ के प्रति उदासीनता ने पर्वतीय अंचल के निवासियों में एक उग्र प्रतिक्रिया को जन्म दिया, जो पृथक राज्य आन्दोलन के रूप में सामने आया। 1897 से इस आन्दोलन की शुरूआत तो 'कुमाऊँ स्वायत्तता' के रूप में हुई थी। उस समय टिहरी रियासत को छोड़ कर पूरा उत्तराखण्ड 'कुमाऊँ' कहलाता था, जिसमें टिहरी को छोड़कर शेष गढ़वाल क्षेत्र भी शामिल था। कालातंर में यह माँग पृथक राज्य आन्दोलन में परिवर्तित हो गयी।[21]

उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन गिर्दा की रचनात्मक सक्रियता का महत्वपूर्ण पड़ाव था। अपने गीतों और कविताओं के माध्यम से एक ओर वे जनमानस में जोश व उत्साह बढ़ा रहे थे, तो वहीं स्वयं आन्दोलन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल भी थे।

जब राज्य आन्दोलन चरम पर था, तब लोगों को आन्दोलन से जोड़ने और आन्दोलन के उद्देश्यों को जनमानस के बीच पहुँचाने के लिए 'नैनीताल समाचार' द्वारा चलाए गये मौखिक रूप से **' उत्तराखण्ड बुलेटिन**' के गिर्दा मुख्य स्तम्भों में से एक थे। इस बुलेटिन की शुरूआत ही गिर्दा के हुड़के की थाप के साथ 'आज हिमाल तुमन कैं धत्यूंछौ' के साथ होती थी। यह बुलेटिन 53 दिन तक चला। जिसके परिणामस्वरूप आम जनमानस तक इस आन्दोलन की गूंज पहुँची और यह आन्दोलन उत्तराखण्ड की समस्त जनता का आन्दोलन बन गया।[22]

अक्टूबर 1983 को नैनीताल में हुए गोलीकांड और राज्य आन्दोलन के दौरान 1994 में 01 सितम्बर को खटीमा, 02 सितम्बर को मसूरी तथा 02 अक्टूबर को रामपुर तिराहे पर पुलिसकर्मियों द्वारा आन्दोलनकारियों (जिनमें महिलाएँ भी शामिल थीं) के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया तथा गोलियां बरसाई गयी, जिसमें कई आन्दोलनकारी शहीद हो गये। सरकार द्वारा की गयी दमनात्मक कार्यवाही का यह रौद्र रूप देख कवि हृदय में सरकार और राजनीतिक हुक्मरानों के प्रति गुस्से को उनकी कविता का एक–एक शब्द स्पष्ट रूप से बयाँ करते हैं।

हालाते सरकार ऐसी हो पड़ी तो क्या करें ?
हो गई लाजिम जलानी झोपड़ी तो क्या करें ?
गोलियां कोई निशाना साधकर चलाई थी क्या ?
खुद निशाने पर आ पड़ी खोपड़ी तो क्या करें ? [23]

आन्दोलनों और बलिदानों के फलस्वरूप 09 नवम्बर, 2000 को उत्तरा प्रदेश के 13 पर्वतीय जिलों को मिलाकर भारतीय गणराज्य के 27वें राज्य के रूप में, 11वां हिमालयी राज्य उत्तरांचल गठित हुआ, राजधानी बनी देहरादून। जबकि जनता की माँग थी कि राज्य का नाम उत्तराखण्ड हो और राजधानी गैरसैंण हो। यह परिदृश्य देख गिर्दा का कवि हृदय बोल उठा कि 'हम अपनी औकात के हिसाब से डिबिया जैसी छोटी सी राजधानी गैरसैण में चाहते थे। देहरादून जैसी रौकात अगर वहाँ भी करनी है तो राजधानी को लखनऊ से भी कहीं दूर ले जाओ'।[24] जनवरी, 2007 से राज्य का नाम परिवर्तित कर 'उत्तराखण्ड' कर दिया गया लेकिन राजधानी आज भी देहरादून (अस्थाई) ही है। हालांकि राज्य गठन के समय से प्रस्तावित राजधानी गैरसैंण के समीप भराड़ीसैंण में विधानसभा का भवन बनाया गया है, जहां कभी कभार विधानसभा के एकाध सत्र आयोजित किए जाते हैं, लेकिन राज्य गठन के लगभग 25 वर्षों के समय में भी गैरसैण में स्थाई राजधानी स्थापित नहीं की जा सकी है।

[21] *हुसैन जाकिर(1998)उत्तराखण्ड पृथक राज्य आन्दोलन और क्षेत्रीय राजनीति,, बरेली, पृष्ठ–60–61*
[22] *गिर्दा के आयाम (2015) वही, पृष्ठ–237*
[23] *गिर्दा के आयाम (2015) वही पृष्ठ–128*
[24] *गिर्दा के आयाम (2015) वही, पृष्ठ–238*

नदी बचाओ अभियान –

नदी बचाओ अभियान टिहरी बाँध के निर्माण तथा विष्णुप्रयाग परियोजना को निजी हाथों में दिये जाने के विरोध में शुरू हुआ। जो तब से निरंतर जारी ही है। सरकारों द्वारा कई योजनाएं और वित्त की व्यवस्था भी समय–समय पर नदियों की दशा सुधारने के लिए की गयी। लेकिन नदियों की दशाएं जस की तस बनी ही है। नदी बचाओ अभियान में 2008 के दौरान स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद भी गिर्दा आन्दोलन में सक्रिय रहे। घर वालों के मना करने के पर भी वे नहीं माने। उनका कहना था कि, उत्तराखण्ड में नदियों के किनारे हो रहे अतिक्रमण, खनन, और स्थापित की जा रही विद्युत परियोजनाओं तथा बड़े–बड़े बाँधों के निर्माण से यहाँ की नदियों और पहाड़ को खतरा है। भौगोलिक संरचना के आधार पर ये कार्य इस क्षेत्र में विकास नहीं विनाश का कारण बन जाएंगे। इसलिए उन्होंने सरकार और पूँजीपतियो द्वारा किये जा रहे इस क्षेत्र के दोहन का खुलकर विरोध किया। उनके विचारों को आन्दोलन के दौरान लिखी उनकी कविता से समझा जा सकता है। जिसकी प्रत्येक पंक्तियाँ वर्तमान परिस्थितियों में फिट बैठती है। पूँजीपतियों और सरकार की प्रकृति विरोधी गतिविधियों पर कटाक्ष करते हुए उनके कवि मन से जो शब्द निकले वो इस प्रकार थे –

अजी वाह, क्या बात तुम्हारी, तुम तो पानी के भी व्यापारी।
खेल तुम्हारा, तुम ही खिलाड़ी, बिछी हुई बिसात तुम्हारी।
सारा पानी चूस रहे हो, नदी समन्दर लूट रहे हो।
गंगा यमुना की छाती पर, कंकड़ पत्थर कूट रहे हो।[25]

प्रकृति के साथ छेड़खानी करने के भावी परिणामों के बारे में गिर्दा के विचार वर्तमान में बिल्कुल सटीक बैठ रहे हैं। भूस्खलन, बाढ़ जैसी आपदाओं से जहाँ एक ओर जनजीवन अस्त–व्यस्त हो रहा है तो वहीं इन मामलों में सरकार की चुप्पी सरकार की मंशा स्पष्ट करती है। पहाड़ों में हो रहे अन्धाधुंध कटान के कारण भूस्खलन, और खनन से सूखती नदियों के विषय में भविष्य के लिए सचेत करते हुए उन्होंने लिखा –

महल चौबारे बह जाएंगे, खाली रौखड़ रह जाएंगे
बूंद बुंद को तरसोगे जब, बोल व्यापारी तब क्या होगा
दिल्ली, देहरादून में बैठे, योजनकारी तब क्या होगा[26]

पूँजीपतियों द्वारा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने का विकराल परिदृश्य 16–17 जून, 2013 की रूद्रप्रयाग जनपद में केदारनाथ आपदा और 07 फरवरी, 2021 को चमोली में नन्दादेवी ग्लेशियर के टूटने से ऋषिगंगा पर बने जलविद्युत परियोजना के ध्वस्त होने से हुए हताहत परिवारों के जान–माल के नुकसान के रूप में हमारे सामने है। इन आपदाओं का शिकार अधिकांशतः वो लोग हुए जो इन आपदाओं के लिए जिम्मेदार थे ही नहीं, और जो जिम्मेदार हैं वो अब भी शहरों में अपने महलों में आराम से जी रहें हैं।

निष्कर्ष–

गिर्दा जन–आन्दोलनों की चलती–फिरती पाठशाला थे। उनके व्यक्तित्व में तमाम विभिन्नताएं, विषमताएं और विकटताएं एकाकार हो जाती थी। उत्तराखंड की संस्कृति के बारे में जितनी समझ और जानकारी गिर्दा को थी और जितना काम उन्होंने उसे बचाने के लिए किया, वैसा और नहीं हो सकता। आन्दोलनों और जनसरोकारों की बात जब भी होगी गिर्दा के विचार, गीत, और कविताएं हमेशा वहां मौजूद होंगे। जनवादी होने का ही प्रमाण था कि समाज की कुरीतियां कभी उनके ऊपर हावी नहीं हो पायी। उन्होंने रचनाओं के माध्यम से हमेशा राजनीति के ठेकेदारों पर गहरा वार किया। राज्य आन्दोलन के दौरान लोगो को एक साथ बांधने का काम भी गिर्दा ने किया। उस दौरान नैनीताल समाचार द्वारा जारी किए गए उत्तराखंण्ड बुलेटिन में गिर्दा की जानदार भूमिका रही और यह बुलेटिन काफी चर्चित हुआ।

[25] https://youtu.be/yhAD6wW6E2g?si=tgaqaWCEzEjylSiz
[26] https://youtu.be/yhAD6wW6E2g?si=tgaqaWCEzEjylSiz

इसलिए आवश्यक है कि उत्तराखण्ड में विकास कार्य और परियोजनाओं को स्थापित करने में यहाँ की भौगोलिक संरचना और प्राकृतिक संसाधनो को ध्यान में रखा जाना चाहिए। ताकि यहाँ की नदियाँ, नौले, जंगल, जमीन और पहाड़ तथा संस्कृति सुरक्षित एवं संरक्षित हो सकें, और यह पर्वतीय प्रदेश सदैव अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण आकर्षण का केन्द्र बना रहे।

उत्तराखण्ड मे गिर्दा की अहमियत महज एक कवि तक नहीं है। वह सही मायने में एक दूरदर्शी आन्दोलनकारी थे। उनके दुनिया से विदा होने से उत्तराखण्ड ने एक सच्चा प्रकृति प्रेमी, जनकवि, संस्कृतिकर्मी, जनआन्दोलनकारी व्यक्तित्व खो दिया है, पहाड की समस्याओं से जुड़े आन्दोलनों में उनके विचार, कविता, गीत आज भी प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ सूची

1. http/www.kafaltree.com,21 august 2024
2. http/www.wikipidia.com
3. पाठक शेखर(2019)हरी भरी उम्मीद, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 432
4. http/www.wikipidia.com
5. http/www.kafaltree.com 21aug2024
6. पाठक शेखर– वही पृष्ठ 432
7. http/www.kafaltree.com 21aug2024
8. तिवारी गिरीश 'गिर्दा' (2002) उत्तराखण्ड काव्य, पहाड़ प्रकाशन नैनीताल, पृष्ठ 60
9. गिर्दा के आयाम(2015) पहाड़ प्रकाशन,नैनीताल, अंक 19, पृष्ठ–27
10. गिर्दा के आायाम(2015) वही पृष्ठ– 28–29
11. तिवारी गिरीश 'गिर्दा' (2002) वही पृष्ठ– 26
12. पाठक शेखर– वही पृष्ठ 278
13. पाठक शेखर– वही पृष्ठ 279
14. गिर्दा के आायाम (2015) वही पृष्ठ– 28–29
15. गिर्दा के आायाम (2015)वही, पृष्ठ– 234
16. गिर्दा के आायाम (2015)वही, पृष्ठ–29
17. गिर्दा के आायाम (2015) वही, पृष्ठ–30
18. उत्तरा महिला पत्रिका(2010) नैनीताल, पृष्ठ– 16
19. उत्तरा महिला पत्रिका(2010)वही, पृष्ठ– 13
20. उत्तरा महिला पत्रिका(2010)वही, पृष्ठ– 13
21. हुसैन जाकिर(1998)उत्तराखण्ड पृथक राज्य आन्दोलन और क्षेत्रीय राजनीति,, बरेली, पृष्ठ–60–61
22. गिर्दा के आायाम (2015) वही, पृष्ठ–237
23. गिर्दा के आायाम (2015) वही पृष्ठ–128
24. गिर्दा के आायाम (2015) वही, पृष्ठ–238
25. https://youtu.be/yhAD6wW6E2g?si=tgaqaWCEzEjylSiz
26. https://youtu.be/yhAD6wW6E2g?si=tgaqaWCEzEjylSiz